रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

जल जंगल जमीन की रक्षा के लिए भगवान बिरसा मुंडा ने दिया था अपना बलिदान : अर्जुन मुण्डा जनजातीय कार्यमंत्री, भारत सरकार

– रादुविवि में बिरसा मुंडा बलिदान दिवस पर आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत ऑनलाईन व्याख्यानमाला का आयोजन

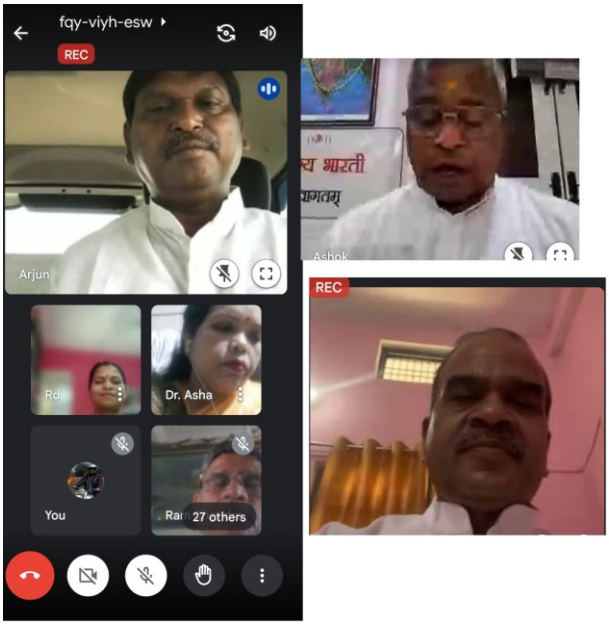

जबलपुर 09 जून। भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 1875 में उलिहातु जो रांची में पड़ता है, में हुआ था. साल्गा गांव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा स्कूल में पढने आए। सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा के मन में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बचपन से ही विद्रोह था। बिरसा मुंडा ने आज ही के दिन अपनी शहादत दी थी। उन्होंने जल जंगल जमीन की रक्षा के लिए अपने जान की कुर्बानी दी। जिनकी वीरता के किस्से आज भी लोगों को रोमांचित करती हैं, उनके जन्म स्थल से लेकर कर्मस्थल तक ऐसे कई किस्से हैं जो लोगों को उन्हें करीब से जानने के लिए उत्साहित करते हैं। उपरोक्त विचार माननीय श्री अर्जुन मुण्डा जी जनजातीय कार्यमंत्री, भारत सरकार ने अमर शहीद बिरसा मुंडा की जन्मस्थली से ऑनलाईन के माध्यम से रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित ऑनलाईन व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

अमर शहीद बिरसा मुंडा बलिदान दिवस के मौके पर लोक प्रबोधनी संस्था, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, नानाजी देशमुख प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में मान. श्री मंगुभाई पटेल जी महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति म.प्र. की प्रेरणा एवं माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र के मार्गदर्शन में ऑनलाईन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। विष्वविद्यालय के आज़ादी का अमृत महोत्सव समिति के संयोजकत्व में स्वातन्त्र्य समर "स्वाधीनता आंदोलन में जनजातीय समाज का संघर्ष" विषय पर आयोजित ऑनलाईन व्याख्यानमाला में स्वागत उद्‌बोधन कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने दिया एवं विषय प्रवर्तन विवि आजादी का अमृत महोत्सव समिति संयोजक डॉ. देवीलता रावत ने प्रस्तुत किया।

युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत–

ऑनलाईन व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में माननीय डॉ. अशोक वार्ष्णेय जी राष्ट्रीय संगठन सचिव आरोग्य भारती ने कहा कि अमर शहीद बिरसा मुंडा युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत हैं। अपने कार्यों और आंदोलन की वजह से लोग बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजते हैं। बिरसा मुण्डा ने अपनी सुधारवादी प्रक्रिया के तहत सामाजिक जीवन में एक आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने नैतिक आचरण की शुद्धता, आत्म–सुधार और एकेश्वरवाद का उपदेश दिया. उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकारते हुए अपने अनुयायियों को सरकार को लगान न देने का आदेश दिया था।

आदिवासी अस्मिता के महानायक–

ऑनलाईन व्याख्यानमाला में विशिष्ट वक्ता माननीय श्री रामचन्द्र खराड़ी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, वनवासी कल्याण आश्रम ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतभूमि पर ऐसे कई नायक पैदा हुए जिन्होंने इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों से लिखवाया। एक छोटी सी आवाज को नारा बनने में देर नहीं लगती बस दम उस आवाज को उठाने वाले में होना चाहिए और इसकी जीती जागती मिसाल थे बिरसा मुंडा। बिरसा मुंडा ने आदिवासी समुदाय के विकास, अस्मिता और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अहम रोल निभाया।

प्रेरणा दायी है धरती आबा के प्रसंग–

ऑनलाईन व्याख्यानमाला में विशिष्ट वक्ता माननीय श्री माधवेन्द्र जी केन्द्रीय महामंत्री, एकल अभियान ने बिरसा मुंडा की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वे स्वतंत्रता संग्राम के अजेय योद्धा थे। भगवान बिरसा मुंडा ने 25 वर्ष की उम्र में ही अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये थे। वे स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे नायक थे, जिनकी वीरता और शौर्य के किस्से आज भी रोमांचित करते है। धरती आबा की जन्मस्थली उलिहातू से लेकर कर्मस्थली बंदगांव, उनके अद्म्य साहस की कहानी बयां करती है। डोंबारी बुरु की पहाड़ियां, रांची जेल का वह कमरा जहां उन्होंने अंतिम सांस ली और राजधानी के कोकर का समाधि स्थल इस वीर का क्रांति पथ है।

इनकी रही उपस्थिति–

बिरसा मुंडा बलिदान दिवस पर आयोजित ऑनलाईन व्याख्यानमाला का संचालन डॉ. आशारानी एवं आभार प्रदर्शन डॉ. आशीष मिश्रा जी नानाजी देशमुख संस्थान, जबलपुर ने किया। अतिथि परिचय डॉ. मीनल दुबे, डॉ. सरिता यादव, डॉ. हरीश यादव ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. ब्रजेन्द्र शुक्ला लोकप्रबोधिनी, रीवा, आयोजन संयोजिका डॉ. देवीलता रावत सहित विवि आजादी का अमृत महोत्सव समिति के सभी सदस्य एवं अन्य स्थानों से शामिल प्रतिभागी मौजूद रहे।